MAA OMWATI DEGREECOLLEGE,

HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

M.A(History) 2nd Semester,

Modern World(Paper-3)

M.A (History) 2 semester PAPER – 3
Important questions Modern World
Page :
Date :
unit - 1

Q1. 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति के तात्कालिक एवं चिरस्थायी प्रभाव क्या थे।

Ans:- फ्रांस की क्रान्ति एक युगान्तकारी घटना थी जिसने न केवल फ्रांस को अपितु यूरोप तथा विश्व के सभी लोगों को व्यापक रूप से प्रभावित किया। जर्मन दार्शनिक कांट ने इसे विवेक की विजय कहा है।

(i) फ्रांस पर प्रभाव :

क्योंकि यह घटना फ्रांस से संबंधित थी अतः स्वाभाविक ही है कि इसने सबसे अधिक फ्रांस को ही प्रभावित किया क्रान्ति ने फ्रांस की राजनीति, धर्म एवं

Scanned with OKEN Scanner

समाज व्यवस्था व अर्थव्यवस्था मे भारी परिवर्तन किया।

(1) राजतन्त्र का अन्त :—

1789 ई. की क्रान्ति से पहले फ्रांस मे बुर्बो वंश का निरंकुश राजा था बुर्बो वंश के शासक राजत्व के दैवीय सिद्धान्त मे विश्वास करते थे।

2.) सामन्तवाद के अवशेषों का अन्त :—

क्रान्ति से पहले फ्रांस का समाज सामन्तवाद के बंधनो से जकड़ा हुआ था। समाज के विशेषाधिकार प्राप्त वर्गो कुलीनों तथा पादरियों का प्रशासन के महत्वपूर्ण पदों पर एकाधिकार था।

3. गणतन्त्रीय सिद्धान्तों की स्थापना :—

क्रान्ति ने फ्रांस मे निरंकुश राजतन्त्र का अन्त करके गणतन्त्रीय सिद्धान्तों की। क्रान्ति से पहले शासन की सभी शक्तियां एवं तानाशाह सम्राट के हाथो मे थी।

4.) मानव अधिकारों की घोषणा :—

क्रान्ति द्वारा फ्रांस के नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकारों की प्राप्त हुई। क्रान्ति से पहले साधारण वर्ग के लोग के पास किसी प्रकार के अधिकार नही थे।

5.) शासन व्यवस्था मे सुधार :—

फ्रांस मे क्रान्ति का एक प्रमुख कारण शासन

व्यवस्था में व्याप्त अराजकता एवं अव्यवस्था भी था।

6) न्यायिक व्यवस्था में सुधार :

क्रान्ति से पहले फ्रांस की न्यायिक व्यवस्था में अनेक दोष थे। अधिकार सम्पन्न वर्ग साधारण वर्ग के लोगों का शोषण करते थे।

7) सैनिक व्यवस्था में सुधार :

1789 ई. की क्रान्ति के बाद फ्रांस की सैनिक व्यवस्था में भी अनेक सुधार किये गये। शाही सेना को समाप्त करके राष्ट्रीय सेना का गठन किया गया। सेना में कुलीन वर्ग के अधिकार को समाप्त किया गया।

यूरोप पर प्रभाव :

फ्रांस की क्रान्ति का यूरोप से प्रत्यक्ष संबंध था अतः यूरोप भी क्रान्ति के प्रभावों से अछूता नहीं रहा।

(1) यूरोप का गुटों में विभाजन :

फ्रांस की क्रान्ति के कारण यूरोप गुटों में बँट गया में फ्रांस के समर्थक तथा इंग्लैंड के समर्थक। क्रान्ति के प्रारंभ में इंग्लैंड व अन्य देशों में क्रान्ति पर खुशियाँ मनाई गई थी।

(2) इंग्लैंड पर प्रभाव :

फ्रांसीसी क्रान्ति का इंग्लैंड पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

Page :
Date :

Q.2. इंग्लैंड के विभिन्न सुधार कानूनों का विवरण दीजिए।

Ans:- इंग्लैंड की प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली तथा संसदीय शासन व्यवस्था विश्व की सभी संसदीय व्यवस्थाओं में सर्वोत्तम मानी जाती है। विश्व में लोकतन्त्रीय एवं उदारवादी विचारधारा का उदय विश्व में सबसे पहले इंग्लैंड में हुआ। पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर जोर दिया गया था।

प्रो. लॉस्की के मतानुसार, "उदारवाद एक चिन्तन प्रवृत्ति की अपेक्षा किसी मत की अभिव्यक्ति कम है।

Page :
Date :

उदारवाद के मूल सिद्धान्त :-

(1) उदारवादी विचारधारा का महत्वपूर्ण तत्व मानवीय बुद्धि तथा विवेक में आस्था है।

(2) उदारवाद मानवीय विवेक में विश्वास रखता है।

3.) उदारवादी विचारधारा स्वतन्त्रता को मानव का प्राकृतिक तथा जन्मजात अधिकार मानती है।

4.) उदारवादियों के चिन्तन का मूल आधार व्यक्ति है।

5.) उदारवादी समाज तथा राज्य को प्राकृतिक नहीं कृत्रिम मानते हैं।

6.) उदारवाद धर्म-निरपेक्ष राज्य के आदर्श में विश्वास करता है।

Scanned with OKEN Scanner

इंग्लैंड में उदारवाद का विकास :

राजनीति में उदारवाद शब्द का प्रयोग सबसे पहले 19वीं शताब्दी के आरम्भ में स्पेन के संविधान में किया गया।

1. **प्रथम सुधार अधिनियम** :

1832 ई. के सुधार अधिनियम को दो भागों में बांटा था। पहले भाग में निर्वाचन क्षेत्रों से संबंधित तथा दूसरे भाग में मताधिकार से संबंधित धाराएं थी।

(ii) **दूसरा सुधार अधिनियम** (1867 ई.)

पहला सुधार अधिनियम अधूरा था। इससे जनसाधारण को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। उच्च मध्यम वर्ग ने निम्न वर्ग की दशा सुधारने के लिए कुछ भी नहीं किया।

(iii) **तृतीय सुधार अधिनियम** : 1884 ई.

1884 ई. में लिबरल दल के नेता ग्लैडस्टोन के प्रधानमंत्री काल में तीसरा संसदीय सुधार अधिनियम पारित हुआ। 1885 ई. में सरकार ने सीटों के पुनर्वितरण का अधिनियम पास किया। इसके द्वारा निर्वाचन क्षेत्रों का पुनर्वितरण किया गया। 15000 की आबादी से कम वाले बरो का प्रतिनिधित्व समाप्त कर दिया।

Scanned with OKEN Scanner

Page :
Date :

(1.) रूस की सन् 1917 की क्रांति से पूर्व रूस की राजनीतिक एवं सामाजिक दशा का विवेचन कीजिए।

Ans:- सन् 1917 की रूसी क्रांति से पूर्व रूस की दशा का विवेचन निम्नांकित बिन्दुओं द्वारा किया जा सकता है।

(i) रूस में एकतंत्र राजसत्ता की स्थापना :- सन् 1905 ई. की क्रांति के पश्चात् रूस में पार्लियामेन्ट की स्थापना हो चुकी थी परन्तु फिर भी वास्तविक राजसत्ता सम्राट और उसके दरबारियों के हाथों में थी सम्राट की मनमानी रोकने के लिए जनता के पास कोई भी साधन न था।

Page :
Date :

2.) रूस में क्रांति और जारशाही का अन्त :- कल कारखानों की स्थापना से मजदूरों की संख्या अधिक बढ़ गई थी। मजदूरों ने राजनीति में रुचि लेना आरम्भ कर दिया था। सन् 1905 ई. की क्रांति ने मजदूरों और साधारण जनता में जागरण उत्पन्न कर दिया था।

3. रूस में अस्थायी सरकार की स्थापना :- रूस स्थायी सरकार में गुच्च को युद्धमंत्री, टेरेस्की को अभमंत्री तथा केरेन्सकी को न्यायमूर्ति नियुक्त किया गया। मित्रराष्ट्रों ने रूस अस्थायी सरकार को स्वीकार कर लिया था। रूस नवीन सरकार ने अनेक राजनीतिक बन्दियों

को मुक्त कर दिया था।

(4) करेन्सकी की सरकार की स्थापना :—

रूस में एक सोवियत सरकार स्थापित की गई। मई 1917 ई. में सोवियतों की अखिल रूसी कांग्रेस का अधिवेशन मास्को में हुआ जिसमें घोषित किया गया कि राजनीतिक क्रांति के साथ-साथ सामाजिक क्रान्ति का होना भी परमावश्यक है।

(5) बोल्शेविक पार्टी का जन्म :—

रूस में प्रथम साम्यवादी नेता प्लेखनोव हुआ। उसने जनवा में जाकर मजदूरों की मुक्ति का आंदोलन आरम्भ किया।

6. लेनिनवाद का जन्म :— लेनिन ने रूस में मजदूरों का आंदोलन तथा बोल्शेविक क्रान्ति के लिए एक मैदान तैयार कर लिया था।

(7) रूस में क्रान्ति :— बोल्शेविक दल के शक्तिशाली होते ही रूस की जनता ने क्रान्ति का झण्डा खड़ा कर दिया।

(8) ब्रेस्टलिटोवस्क की सन्धि :—

सत्तारूढ़ होते ही लेनिन ने जर्मन के साथ सन्धि करके युद्ध का अन्त कर दिया था।

Unit 2

Page: Date:

Q.4. जापान के आधुनिकीकरण का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

Ans:- जापान में शोगुन के शासन की समाप्ति तथा मेइजी पुनर्स्थापना दोनों घटनाएँ अत्यन्त असाधारण ढंग से सम्पन्न हुई परंतु इन घटनाओं का जापान के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इन सभी ने जापान को नवजीवन प्रदान किया था।

1. शाही शपथ :- 1868 ई० में जापान के नये सम्राट मुत्सुहितो ने 6 अप्रैल 1868 ई० को अपने शासन के उद्देश्य तथा सिद्धांतों के बारे में एक शपथ जारी की जिसे जापान में मानव अधिकारों की घोषणा कहा जाता है।

Page: Date:

2. सामन्त प्रथा का अन्त :- यद्यपि, मेइजी पुनर्स्थापना में सामंत वर्ग का महत्वपूर्ण हाथ था परंतु शासन को सुदृढ़ तथा केन्द्रीभूत बनाने के लिए सामन्त वर्ग को समाप्त करना परम आवश्यक था।

3.) शासन का केन्द्रीयकरण :- सम्राट मुत्सुहितो ने देश की शासन व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने के लिए तथा उसे शक्तिशाली बनाने के लिए शासन का केन्द्रीयकरण किया। देश की राजधानी को क्योतो से हटाकर येदो स्थानान्तरित कर दिया गया तथा इसका नाम तोकियो रख दिया गया।

4.) कृषि में सुधार :— 1868 ई. के बाद जापान के कृषि क्षेत्र में भी उन्नति हुई सामन्त प्रथा की समाप्ति के बाद 1872 ई. में किसानों को भूमि का स्वामित्व प्राप्त हो गया।

5). शिक्षा के क्षेत्र में सुधार :— मेइजी पुनर्स्थापना के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी क्रांति हुई। जापानियों ने नये पाश्चात्य विश्व को जानने का उत्साह पहले से ही था। शोगुन शासन ने 1811 ई. में पाश्चात्य भाषाओं के ग्रन्थों का जापानी भाषा में अनुवाद करने के लिए बांशो शीरानेशो नामक संस्था का गठन किया था

6). नवीन जीवन-शैली का विकास :— शिक्षा के पाश्चात्यीकरण के परिणामस्वरूप जापानियों की जीवन-शैली बदल गई। 1872 ई. में दरबारी तथा सरकारी मौकों पर पाश्चात्य पोशाक पहनना अनिवार्य कर दिया गया।

7). ईसाई धर्म की पुनः स्थापना :— मेइजी काल से पहले शोगुनों ने ईसाई धर्म संरक्षण प्रदान किया था।

Q.35 प्रथम विश्व युद्ध के कारणों, घटना परिणाम का उल्लेख कीजिए।

Ans - प्रथम विश्व युद्ध की ही नहीं बल्कि विश्व के इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है ऐसा नहीं है कि इससे पूर्व यूरोप के देशों के बीच युद्ध हुए ही नहीं थे इससे पहले युद्ध क्षेत्रीय स्तर पर लड़े गए।

प्रथम विश्व युद्ध के कारण :—

1.) यूरोपीय देशों में दलबन्दी :— प्रथम विश्व युद्ध का एक अत्यंत प्रमुख कारण दलीय प्रथा का जन्म होना था। यूरोपीय महाशक्तियाँ दो परस्पर विरोधी दलों में बंट चुकी थी।

2.) गुप्त कूटनीतिक प्रणाली :— यूरोप में 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक कूटनीति में भ्रष्टाचार व्यापक रूप से फैलने लगा था।

3.) अगादीर का संकट :— 1906 ई के सम्मेलन के बावजूद मोरक्को के विषय में जर्मनी और फ्रांस के बीच मतभेद बने रहे।

4) सैनिकवाद का उदय :— 19 वीं शताब्दी में यूरोप में सैनिकवाद का तेजी से विकास हुआ।

5) राष्ट्रवाद की भावना का उत्थान :— प्रथम विश्व युद्ध का एक अन्य प्रमुख कारण राष्ट्रीयता की भावना का उत्थान था।

घटनाएँ

1914 ई. की घटनाएँ :—

(1) जर्मनी का बेल्जियम पर आक्रमण :—
बेल्जियम एक तटस्थ राष्ट्र था, परन्तु 20 अगस्त 1914 ई. को फ्रांस की ओर बढ़ते हुए जर्मनी ने बेल्जियम पर हमला बोल दिया।

(2) फ्रांस पर आक्रमण :—
इसके बाद जर्मनी की सेनाएँ आगे बढ़ीं और उन्होंने फ्रांस पर आक्रमण कर दिया।

(3) रूस का पूर्वी प्रशा पर हमला :—
7 अगस्त को रूसी सेनाओं ने पूर्वी प्रशा पर हमला करके जर्मनी के कुछ प्रदेशों को जीत लिया।

परिणाम

1. धन और धन की भारी हानि :—
प्रथम विश्व युद्ध केवल यूरोपीय भूमि पर ही नहीं बल्कि एशिया अफ्रीका तथा अमेरिका महाद्वीपों की भूमियों पर भी लड़ा गया।

(2) लोकतन्त्र का उत्थान :—
इस युद्ध के पूर्व यूरोप के अनेक देशों में निरंकुशता का प्रभाव था।

3. राजतन्त्रात्मक प्रणालियों का आघात :—
इस प्रणालियों में राजतन्त्रात्मक

को भारी आघात पहुँचा।

4.) राष्ट्रसंघ की स्थापना :— प्रथम युद्ध के परिणामस्वरूप 1919 ई. में राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई।

5.) किसानों की स्थिति में परिवर्तन :— इस युद्ध के परिणामस्वरूप अनाज का मूल्य बढ़ गया जिससे किसानों को विशेष लाभ हुआ।

Unit-3

Q.6 पेरिस शांति सम्मेलन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

Ans:— महायुद्ध के बीच में ही इससे होने वाले अपार विनाश को देखते हुए विश्व में शांति स्थापित करने के प्रयास प्रारम्भ हो गए थे। अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने अपने एक भाषण में विश्व में शांति स्थापित करने के लिए 14 सूत्री एक योजना की घोषणा की थी।

विल्सन की 14 सूत्रीय योजना :— वुडरो विल्सन अमेरिका का राष्ट्रपति तथा अपने समय का एक प्रभावशाली नेता था। वह एक आदर्शवादी व्यक्ति था।

Page :
Date :

वर्साय की संधि 28 जून 1919 ई :-

शांति सम्मेलन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि जर्मनी के लिए संधि पत्र तैयार करना थी।

1. प्रादेशिक व्यवस्थाएँ :-

1. 1871 ई. के युद्ध के बाद फ्रांस से लिए गए एल्सास और लॉरेन के प्रदेश, जर्मनी ने फ्रांस को वापस लौटा दिया।

2. जर्मनी तथा बेल्जियम की सीमा का निर्धारण किया गया तथा जर्मनी के कुछ प्रदेश, जैसे यूपेन और मैलमेडी, बेल्जियम को सौंप दिए गए।

3. सार की कोयले की खानों पर फ्रांस का नियंत्रण

Page :
Date :

हो गया

II सैनिक व्यवस्थाएँ :-

विल्सन के चौदह कार्यक्रमों में सभी देशों के लिए निःशस्त्रीकरण की दिशा में कदम उठाने की व्यवस्था थी।

(1.) जर्मनी की जलसेना, थलसेना तथा वायुसेना की संख्या में भारी कटौती करते हुए उसे एक लाख तक की संख्या तक सीमित कर दिया गया।

(2) सैनिक अधिकारियों की सैन्य सेवा की अवधि न्यूनतम 25 वर्ष तक सैनिक के लिए न्यूनतम 12 वर्ष निश्चित कर दी गई।

Scanned with OKEN Scanner

Page :
Date :

लोसान की संधि :-

इस संधि की प्रमुख शर्ते इस प्रकार थी।

1. थ्रेस का पूर्वी भाग, स्मर्ना तथा आर्मीनिया तुर्की को वापस दे दिया गया।

शांति समझौते की आलोचना :-

1919-20 ई. के पेरिस शांति समझौते के द्वारा जर्मनी तथा अन्य देशों के साथ की गई संधियां इतनी अधिक अन्यायपूर्ण नही थी।

Page :
Date :

Q.7. जर्मनी मे नाजीदल के उत्थान एवं उसकी सफलता का वर्णन कीजिए।

Ans:- हिटलर के उत्कर्ष के सम्बन्ध मे डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार लिखते है - जिस समय जर्मनी के रिपब्लिकन और साम्यवादी नेता वर्साय की सन्धि के अनुसार दी जाने वाली हर्जाने की रकमों की अदायगी के बारे मे सहूलियतें प्राप्त करने के लिए मित्रराष्ट्रो से समझौते कर रहे थे।

1. हिटलर ~~हिटलर~~ का प्रारंभिक जीवन :-

हिटलर का जन्म सन 1889 ई. मे आस्ट्रिया के एक गाँव मे एक निम्न श्रेणी के परिवार मे हुआ था।

उसके माता-पिता इतने निर्धन थे कि वे हिटलर की शिक्षा की उचित व्यवस्था न कर सके जब हिटलर 12 वर्ष का ही था तब उसके पिता की मृत्यु हो गई थी।

2.) नाजीदल तथा उसके उद्देश्य :—

हिटलर ने सन् 1919 ई. में नाजीदल की स्थापना की थी। सेना में रहने के कारण हिटलर की मित्रता अनेक सैनिकों एवं अफसरों से थी। नाजीदल के उद्देश्य निम्नलिखित है।

(1) वर्साय की संधि को समाप्त किया जाये।

(2) विशाल जर्मन साम्राज्य उसे वापस दिलाये जाये।

(3) जर्मनी के उपनिवेश उसे वापस दिलाये जाये।

(4) जर्मनी की सैनिक शक्ति का विकास किया जाए।

(5) विदेशियों को जर्मनी में न आने दिया जाये।

(6) साम्यवाद के प्रचार का विरोध किया जाये।

(7) राष्ट्रीयता को महत्व दिया जाय।

(1) हिटलर का बन्दी बनाया जाना :—

हिटलर उच्चकोटि का वक्ता था। उसके भाषणों में आग होती थी।

उसके भाषणों में जादू जैसा प्रभाव था। दूर-दूर तक के लोग उसका भाषण सुनने के लिए आते थे।

(ii) नाजी पार्टी का संगठन :— जेल से छूटने के पश्चात् हिटलर ने अपने दल का संगठन करना आरम्भ कर दिया। उसने सभी स्थानों में नाजी पार्टी की शाखाएँ स्थापित की।

(iii) हिटलर की उन्नति की चरम सीमा :— हिटलर के नेतृत्व में नाजियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। नाजियों ने म्युनिख के अतिरिक्त अपनी शक्ति केन्द्र अन्य नगरों और जिलों में स्थापित किये।

(4) हिटलर का चांसलर बनाना :— अब जर्मन सरकार के पास नाजी पार्टी से समझौता करने के सिवाय और कोई चारा न था। हिण्डनबर्ग ने नाजी पार्टी के नेता एडॉल्फ हिटलर को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त कर दिया।

(5) हिटलर का राष्ट्रपति बनाना :— अगस्त सन् 1934 ई. में राष्ट्रपति हिण्डनबर्ग का देहावसान हो गया। उसकी मृत्यु पर हिटलर ने उनके स्थान को ग्रहण कर लिया। उसने राष्ट्रनायक की उपाधि धारण की।

Scanned with OKEN Scanner

Unit-5th

Page :
Date :

(.) हिटलर का कार्यक्रम :-

(i) उसने अपनी पृथक सरकार की स्थापना की।

(ii) उसने नाजी सिद्धांतों का बलपूर्वक प्रचार किया।

(iii) प्रकाशन एवं भाषण की स्वतन्त्रता समाप्त कर दी गई।

Q.8 1949 ई. की क्रांति के कारणों एवं परिणामों विवरण दीजिए।

Ans:- साम्यवाद को व्यापक सफलता मिली है सन् 1917 की रूसी क्रांति के रूप में जब क्रांति द्वारा लेनिन के नेतृत्व में रूस में बाल्शेविक दल सत्तारूढ़ हुआ, जो साम्यवाद एवं समाजवाद पर आधारित था। अब विश्व के सभी प्रमुख देशों में साम्यवाद की माँग उठने लगी। चीन में तो रूसी क्रान्ति का व्यापक प्रभाव हुआ।

सन् 1919 ई. में साम्यवादी व्यवस्था के कट्टर समर्थक माओत्से तुंग ने अपने साथियों के साथ चीन में एक साम्यवादी दल कुंगचानतांग की स्थापना की।

साम्यवादियों के सुधार-कार्य :

(1) श्रमिकों का समर्थन :- आरम्भिक अवस्था में माओत्से तुंग के कुंगच्चानतांग दल को राष्ट्रवादी दल (कुओमिनतांग) से बहुत ही समर्थन मिला क्योंकि दोनों दलों पर रूस का प्रभाव था।

कृषकों का समर्थन :- साम्यवादियों ने कृषकों को भी संगठित किया। उनके प्रयासों के फलस्वरूप सितम्बर, 1922 ई. में किसान नेता चूंग पाग ने 500 किसानों का एक संघ बनाया तथा 1923 ई. में हाईफंग कृषक संघ गठित हुआ।

सेना का संगठन :

सन् 1927 ई. में च्यांग काई शेक ने जब साम्यवादियों पर खुला आघात शुरू कर दिया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बड़े शहरों के मजदूरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों के कृषकों ने संगठन की स्थापना की।

साम्यवादियों का दमन :

सन् 1931 ई. तक साम्यवादी आन्दोलन पूर्ण सशक्तता प्राप्त कर चुका था। सितम्बर, 1931 ई. में मंचूरिया को लेकर जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया और इस मामले को लेकर चीन तथा जापान के बीच एक दीर्घकालीन युद्ध हुआ।

Scanned with OKEN Scanner

Page :
Date :

क्रांति के प्रभाव :—

1949 ई० की चीनी क्रांति विश्व इतिहास में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

(1) शांति और सुरक्षा :—

साम्यवादी सरकार ने चीन में 1949 ई० से लेकर अब तक चली आ रही।

(2) सामाजिक बुराइयों की समाप्ति :—

नई साम्यवादी सरकार ने चीनी समाज में फैली सभी सामाजिक बुराइयों का या तो अंत कर दिया गया था।

3) स्त्रियों की स्थिति में सुधार :—

इस क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण स्त्रियों की दशा में सुधार था।

Page :
Date :

Q.9. दो विश्वयुद्धों के बीच निःशस्त्रीकरण के लिए किए गए प्रयासों का वर्णन कीजिए।

Ans. मनुष्य की सदैव से यह इच्छा रही है कि झगड़ों का निपटारा शान्तिपूर्वक उपायों से किया जाए, परन्तु इन उपायों की असफलता पर युद्ध ही एक माध्यम रह जाता नेपोलियन के युद्धों से लग आकर भी इस संबंध में विभिन्न प्रयास किए गए थे।

(i) पेरिस का शान्ति सम्मेलन :—

विश्व का प्रथम महायुद्ध जर्मनी की साम्राज्यवादी आकांक्षाओं का फल था। अतएव सबसे पहले 1919 में विश्व के सभी राज्यों ने पेरिस की शांति परिषद् में जर्मनी

के निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में विचार किया जा सकता था।

(2) विभिन्न मतभेद :— पेरिस की शांति परिषद में मह तय हो गया कि सभी राज्य केवल उतनी ही सेनाएं रखे जितनी उनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक है।

(3) नौसेना पर नियन्त्रण :— पीछे लिखा गया है कि बड़े-बड़े जंगी जहाजों के कारण युद्ध में भारी नुकसान हुआ था।

(4) जेनेवा सम्मेलन :— ब्रिटेन छोटे जहाजों की संख्या बढ़ा रहा था जिससे विश्व के अन्य देशों को भारी परेशानी थी।

(5) नौसेना नियन्त्रण में कठिनाइयाँ :— अभी तक विश्व के राज्यों ने नौसेना के नियन्त्रण के लिए दो बार प्रयास किये थे।

(6.) स्थल सेना पर नियन्त्रण :— राज्यों की स्थल सेना पर नियन्त्रण करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की गई जिसको यह कार्य सौंपा गया कि वह रिपोर्ट करे कि किन-किन राज्यों को सुरक्षा की दृष्टि से कितनी सेना की आवश्यकता है।

Scanned with OKEN Scanner

7) नि:शस्त्रीकरण सम्मेलन :—

इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि श्री हेण्डरसन की अध्यक्षता में राष्ट्र संघ के सब सदस्य राज्यों के प्रतिनिधि सन् 1932 में जेनेवा में एकत्रित हुए और वहाँ उन्होंने आयोग की रिपोर्ट करने वाले साधनों के नियन्त्रण की समस्या पर विचार किया।

(8) नि:शस्त्रीकरण में असफलता :—

सब राज्यों ने बहुमत से उक्त तीन बातों का निर्णय किया था।

(i) सदस्यों में इस बात का निर्णय न हो सका कि कौन-कौन से अस्त्र शस्त्र आत्म-सुरक्षा के लिए प्रत्येक राज्य के लिए आवश्यक है।

(ii) जनेवा कान्फ्रेंस :— में यह निर्णय नहीं किया गया कि किस वजह से अधिक तोपें और टैंक न रखे जायें।

(iii) यह भी तय नहीं किया गया कि कौन-कौन से द्रव्य रासायनिक हैं।

(iv) जर्मनी, इटली और जापान भी अपने साम्राज्य विस्तार की योजनाओं में लगे हुए थे।

Q.10. गुटनिरपेक्षवाद को मजबूत करने मे भारत की भूमिका का वर्णन करें।

Ans:- गुट-निरपेक्षता का अर्थ है। किसी भी गुट मे विशेषकर सैनिक गुट मे शामिल न होना जिन परिस्थितियो का उदय हुआ उन दिनो सोवियत संघ समर्थित व अमरीका समर्थित सैनिक गठबन्धनो का बोलबाला था

भारत द्वारा गुट-निरपेक्ष नीति अपनाने के कारण :-

(1.) भारत द्वारा साम्यवाद या पुंजीवाद जैसे वैचारिक पचडे मे न पडने की इच्छा :-

आजादी के बाद भारत ने पाया कि विश्व वैचारिक तौर पर साम्यवादी एवं पुंजीवादी विचारधारा के आधार पर बंटता आरम्भ हो गया है।

2. भारत द्वारा किसी भी महाशक्ति का मोहरा न बनने की इच्छा :-

भारत ने पाया कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति दो भागो मे विभाजित हो चुकी है।

3. आर्थिक दृष्टि से भारत द्वारा निरपेक्ष नीति अपनाना उचित :-

प्रो जे. बंद्योपाध्याय का कथन है कि भारत जैसे विकासशील देश के संदर्भ मे जहां आर्थिक विकास को प्राथमिकता दी जाती है।

4.) स्वतन्त्र विदेश नीति-निर्माण की इच्छा :-

लम्बे राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन तथा ब्रिटिश शासन के दौरान आर्थिक शोषण एवं राजनीतिक दमन के कारण भारतीय स्वतन्त्रता सेनानी

Scanned with OKEN Scanner

यह अनुमान कर चुके थे।

5.) भारत विश्व शान्ति एवं सुरक्षा का पुजारी :—

भारत बुद्ध अशोक एवं गाँधी का राष्ट्र रहा है। उन्होंने जिन्दगी भर विश्व शान्ति एवं सुरक्षा के अग्रदूत बनकर काम किया।

शान्ति से गुट-निरपेक्षता का उल्लंघन

(i) शान्ति का स्वरूप सैनिक है :—

यद्यपि इस शान्ति का नाम भारत-सोवियत मैत्री व सहयोग शान्ति रखा गया है।

(ii) शान्ति से भारतीय नीति की स्वतन्त्रता को ठेस पहुँची है :—

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भारत की भूमिका :—

गुटबन्दी के विरुद्ध तथा गुट-निरपेक्षता के पक्ष में सभी तर्कों के कारण भारत द्वारा अपनी विदेश नीति के मूल सिद्धान्त के रूप में गुटबन्दी न अपनाना स्वाभाविक ही गया तथा 1947 से लेकर अब तक भारत इसका निष्ठापूर्वक निरन्तर पालन करता रहा है।